भारत में जातीय आन्दोलन (Ethnic Movements in India)

1. प्रस्तावना

भारत बहुजातीय (Multi-ethnic), बहुभाषिक और बहुधार्मिक समाज है। यहाँ विभिन्न समुदायों की अपनी भाषा, संस्कृति, परंपरा और पहचान रही है। जब किसी जातीय समूह (Ethnic Group) को अपनी पहचान, संसाधनों या राजनीतिक अधिकारों पर खतरा महसूस होता है, तो वह **जातीय आन्दोलन (Ethnic Movement)** का रूप ले लेता है।

---

2. जातीय आन्दोलन के कारण

1. **सांस्कृतिक कारण** – भाषा, धर्म, रीति-रिवाज, परंपरा की रक्षा।
2. **आर्थिक कारण** – संसाधनों (जमीन, नौकरियों, शिक्षा) पर नियंत्रण।
3. **राजनीतिक कारण** – स्वायत्तता, राज्य की माँग या अलग राष्ट्र की आकांक्षा।
4. **सामाजिक कारण** – पहचान (Identity) और गरिमा (Dignity) की खोज।
5. **औपनिवेशिक विरासत** – ब्रिटिश नीतियों ने विभाजन और पहचान आधारित राजनीति को बढ़ावा दिया।

---

3. भारत में प्रमुख जातीय आन्दोलन

(क) पूर्वोत्तर भारत

- **नागा आन्दोलन** –
    - सबसे पुराना जातीय आन्दोलन, 1940 के दशक से।
    - *Naga National Council* और बाद में *NSCN* ने स्वतंत्र नागा राष्ट्र की माँग की।
    - वर्तमान में नगालैंड को विशेष संवैधानिक दर्जा (अनुच्छेद 371A)।
- **मिज़ो आन्दोलन (1966–1986)** –
    - अकाल और उपेक्षा से असंतोष।
    - *Mizo National Front* ने अलगाववादी संघर्ष किया।

- 1986 में *Mizo Accord* से शांति स्थापित हुई।

- **बोडो आन्दोलन (असम)** –
  - बोडो जनजाति ने *बोडोलैंड* की माँग की।
  - 2003 और 2020 के समझौते से *बोडोलैंड टेरिटोरियल रीजन (BTR)* का गठन।
- **असम आन्दोलन (1979–1985)** –
  - विदेशी (विशेषकर बांग्लादेशी) प्रवासियों के विरोध में।
  - असम गण परिषद की स्थापना और *असम समझौता (1985)*।

(ख) उत्तर भारत

- **गोरखा आन्दोलन (दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल)** –
  - गोरखालैंड राज्य की माँग।
  - गोरखा जनमुक्ति मोर्चा (GJM) और गोरखा नेशनल लिबरेशन फ्रंट (GNLF) का आन्दोलन।
- **जाट और गुर्जर आन्दोलन (राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश)** –
  - आरक्षण और पिछड़े वर्ग का दर्जा पाने की माँग।

(ग) मध्य और दक्षिण भारत

- **झारखंड आन्दोलन** –
  - आदिवासी पहचान और संसाधनों की रक्षा की माँग।
  - 2000 में *झारखंड राज्य* का गठन।
- **तेलंगाना आन्दोलन** –
  - क्षेत्रीय असमानता और पहचान का संघर्ष।
  - 2014 में *तेलंगाना राज्य* का गठन।
- **द्रविड़ आन्दोलन (तमिलनाडु)** –

- हिंदी विरोध, क्षेत्रीय पहचान और सामाजिक न्याय की माँग।
- द्रविड़ मुनेत्र कषगम (DMK) और अन्ना DMK ने इसे राजनीतिक शक्ति में बदला।

---

4. समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण

- **क्लिफर्ड गीर्ट्ज़ (Clifford Geertz)** – जातीय पहचान को "प्राइमॉर्डियल अटैचमेंट" यानी गहरे सांस्कृतिक संबंध बताया।
- **एंथनी स्मिथ (Anthony D. Smith)** – जातीयता को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान का परिणाम मानते हैं।
- **पॉल ब्रास (Paul Brass)** – जातीय संघर्ष को राजनीतिक नेतृत्व और संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा का परिणाम मानते हैं।
- **ए.आर. देसाई** – भारत में जातीय आन्दोलनों को वर्गीय व आर्थिक असमानताओं से भी जोड़ते हैं।
- **रणजीत गुहा** – *Subaltern Studies* के अंतर्गत जातीय आन्दोलनों को "वंचितों की आवाज़" बताया।

---

5. जातीय आन्दोलनों की विशेषताएँ

1. **सांस्कृतिक पहचान की रक्षा**।
2. **राजनीतिक स्वायत्तता या अलग राज्य की माँग**।
3. **हिंसक और अहिंसक दोनों रूप**।
4. **सामाजिक असमानता और संसाधनों का संघर्ष**।
5. **राष्ट्रीय एकता के लिए चुनौती**, परन्तु लोकतांत्रिक विमर्श को मजबूती भी।

---

6. निष्कर्ष

भारत में जातीय आन्दोलन केवल अलगाव की प्रवृत्ति नहीं बल्कि **पहचान, समानता और न्याय** की माँग हैं। कई बार ये आन्दोलन हिंसक भी हुए, लेकिन संविधान और लोकतांत्रिक राजनीति ने संवाद और समझौतों के ज़रिए इन्हें मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया।